इकाई 2 राष्ट्रीय आय लेखांकन*

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 आय का चक्रीय (वर्तुल) प्रवाह

- 2.2.1 प्रवाहों के प्रकार
- 2.2.2 द्वि–क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था प्रतिरूप में आय का चक्रीय प्रवाह
- 2.2.3 वित्तीय बाजार सहित आय का चक्रीय प्रवाह
- 2.2.4 भराव और रिसाव
- 2.2.5 त्रि–क्षेत्रीय प्रतिरूप में आय का चक्रीय प्रवाह
- 2.2.6 चार–क्षेत्रीय प्रतिरूप में आय का प्रवाह

2.3 राष्ट्रीय आय तथा सम्बन्धित अवधारणाएँ

2.4 सम्बन्धित समुच्चयों का माप

- 2.4.1 निजी आय
- 2.4.2 व्यक्तिक (व्यक्तिगत) आय
- 2.4.3 प्रयोज्य आय

2.5 सार संक्षेप

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप सक्षम होंगे:

- एक अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य सम्बन्ध का आकलन करना;
- एक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय को कैसे मापा जाता है; का वर्णन करना; और
- समष्टिगत समुच्चयों (समग्रों) के विभिन्न घटकों को सुनिश्चित करना।

2.1 प्रस्तावना

राष्ट्रीय आय लेखांकन (लेखा पद्धति) (National Income Accounting, NIA) एक व्यावसायिक लेखा पद्धति है जिसे एक राष्ट्र एक विशिष्ट समयावधि में अपनी आर्थिक क्रिया के स्तर को मापने में प्रयोग करता है। यह अर्थव्यवस्था के विभिन्न हिस्सेदारों अर्थात् एक अर्थव्यवस्था के परिवारों, फर्मों, सरकार तथा बाह्य क्षेत्रों के व्यय तथा आय के समंक (आँकड़ों) को अंकित करता है। हालाँकि यह सटीक तरीके से आर्थिक क्रिया को माप नहीं सकता, यह एक अर्थव्यवस्था के कार्य तथा आय एवं व्यय की संतति (जनन) के माध्यमों/प्रणालियों पर उपयोगी अन्तर्दृष्टि (गहरी पहुँच) उपलब्ध कराता है। हम राष्ट्रीय आय लेखांकन से प्राप्त सभी सूचनाओं से एक अर्थव्यवस्था के निर्धारित समय के लिए प्रति

* डॉ० सरबजीत कौर, ज़ाकिर हुसैन कॉलेज(संध्या), दिल्ली विश्वविद्यालय।

व्यक्ति आय तथा वृद्धि (संवृद्धि) को प्राप्त कर सकते हैं। एक अर्थव्यवस्था के निष्पादन को संकेतकों जैसे कि सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product, GDP), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product, GNP) तथा सकल राष्ट्रीय आय (Gross National Income, GNI) जिनकी चर्चा हम इस इकाई में करेंगे के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। हम एक अर्थव्यवस्था के अन्य सम्बन्धित समुच्चयों की भी चर्चा करेंगे।

2.2 आय का प्रवाह

आय का प्रवाह प्रमुख क्षेत्रों जैसे परिवारों (घरेलू) क्षेत्र, फर्मों (अथवा व्यावसायिक) क्षेत्र, सरकारी क्षेत्र तथा बाह्य क्षेत्र (शेष विश्व भी कहा जाता है) के मध्य वस्तुओं एवं सेवाओं के सतत् चक्रीय संचलन को प्रदर्शित करता है। यह प्रकृति में चक्रीय (वर्तुल) है क्योंकि यह प्रारंभिक बिन्दु पर वापस आते हुए एक चक्र में चलता है। जब भी राष्ट्रीय उत्पादन उत्पादित किया जाता है, तो यह राष्ट्रीय आय के रूप में उस उत्पादन पर माँगों (दावों) की समान मात्रा उत्पन्न करता है। आय का प्रवाह एक अर्थव्यवस्था के सम्पूर्ण क्षेत्र के मुद्रा आय के प्रवाह अथवा वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रवाह को प्रदर्शित करता है।

2.2.1 चक्रीय प्रवाहों के प्रकार

चक्रीय प्रवाहों के दो प्रकार हैं: (i) वास्तविक चक्रीय प्रवाह अथवा उत्पाद प्रवाह (Real Flow or Product Flow), और (ii) आय चक्रीय प्रवाह अथवा मुद्रा प्रवाह (Income flow or Money flow) ।

1. **वास्तविक चक्रीय प्रवाह अथवा उत्पाद प्रवाह**

   वास्तविक चक्रीय प्रवाह वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रवाहों को दर्शाता है। इनको वास्तविक चक्रीय प्रवाह कहा जाता है क्योंकि ये वास्तविक वस्तुओं एवं सेवाओं से बने होते हैं। इसे उत्पाद प्रवाह भी कहा जाता है।

2. **आय चक्रीय प्रवाह अथवा मुद्रा चक्रीय प्रवाह**

   आय चक्रीय प्रवाह साधनों के भुगतानों तथा उपभोग व्यय के रूप में मुद्रा के प्रवाहों को प्रदर्शित करता है। मुद्रा चक्रीय प्रवाह घटित होता है क्योंकि यह मुद्रा के माध्यम से जो विभिन्न लेन–देनों को संचालित करता है, एवं जो एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में मुद्रा चक्रीय प्रवाहों को लाता है। साधन सेवाओं का चक्रीय प्रवाह साधन भुगतानों के रूप में "मुद्रा चक्रीय प्रवाह" को उत्पन्न करता है, जो आय चक्रीय प्रवाह का रूप धारण करता है। वस्तुओं एवं सेवाओं पर खर्च "व्यय चक्रीय प्रवाह" का रूप लेता है। आय तथा व्यय दोनों प्रवाहों को विपरीत दिशा में एक चक्रीय तरीके में व्यक्त किया गया है। इस ढाँचे में, अर्थव्यवस्था को चार क्षेत्रों, यथा i) घरेलू क्षेत्र, ii) व्यावसायिक क्षेत्र, iii) सरकारी क्षेत्र तथा iv) बाह्य क्षेत्र में विभाजित किया गया है।

2.2.2 द्वि–क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय का प्रवाह

आरंभ में, हम मान लेते हैं कि अर्थव्यवस्था केवल दो क्षेत्रों, यथा, i) घरेलू, तथा ii) फर्मों से मिलकर बनी होती है। इस सरलतम अर्थव्यवस्था में, न तो सरकार का हस्तक्षेप है, न ही बाह्य व्यापार है। घरेलू क्षेत्र (परिवार) अपनी संपूर्ण आय को खर्च करते हैं, अर्थात्, घरेलू क्षेत्र के द्वारा कोई भी बचत नहीं की जाती है। चित्र 2.1 एक द्वि–क्षेत्रीय प्रतिरूप में व्यय तथा आय के प्रवाहों को प्रदर्शित करता है। चित्र के ऊपर का आधा भाग साधन बाजार को दिखाता है तथा नीचे का आधा भाग वस्तु/उत्पाद बाजार को प्रस्तुत करता है।

बाह्य दो तीर (घड़ी की सुई की दिशा में) वास्तविक प्रवाहों को इंगित करते हैं तथा आन्तरिक दो तीर (दाएँ से बाएँ) मौद्रिक प्रवाहों को दर्शाते हैं।

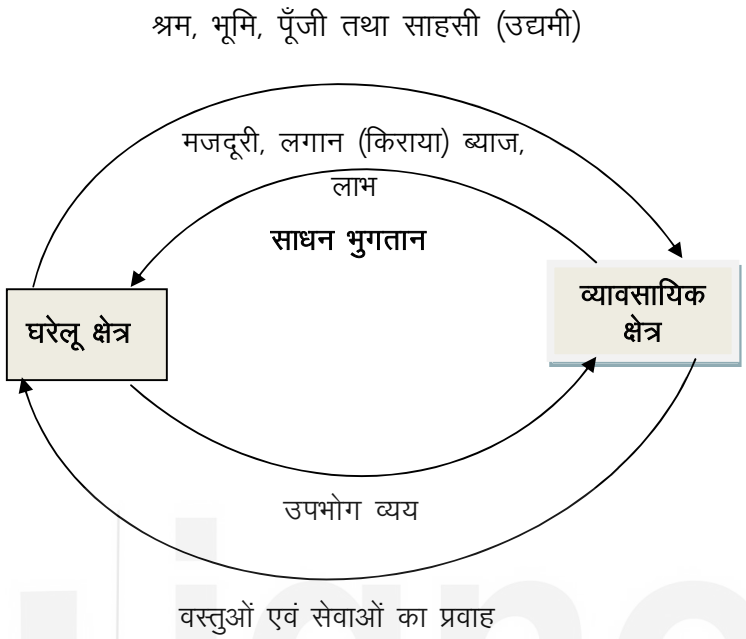

चित्र 2.1 एक द्वि–क्षेत्रीय प्रतिरूप में आय का चक्रीय प्रवाह

हम देख सकते हैं कि प्रत्येक क्षेत्र एक खरीददार तथा एक विक्रेता की भाँति है। व्यावसायिक फर्में वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन हेतु घरेलू क्षेत्र (परिवारों) से साधन सेवाओं को किराए पर लेते हैं, जो उत्पादन के साधनों के स्वामी हैं (अर्थात्, भूमि, श्रम, पूँजी तथा साहसी (उद्यमी)। व्यावसायिक फर्में उत्पादन के साधनों को उत्पादकीय सेवाओं के बदले मुद्रा के रूप में पारिश्रमिक (अथवा, क्षतिपूर्ति) देते हैं। उत्पादन के साधनों को क्षतिपूर्ति अथवा उनकी आय, अर्थात् भूमि, श्रम, पूँजी तथा उद्यमी के लिए क्रमशः लगान (किराया), मजदूरी, ब्याज तथा लाभ उत्पादन प्रक्रिया में उत्पन्न की जाती है। इस प्रकार मुद्रा आय फर्म क्षेत्र से घरेलू क्षेत्र (परिवारों) की तरफ प्रवाहित होती है। इस मुद्रा से, घरेलू क्षेत्र अपनी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए फर्मों से वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदते हैं। इस प्रकार वहीं मुद्रा घरेलू क्षेत्र से फर्म क्षेत्र की ओर वापस प्रवाहित होती है (याद रखें, मान्यता यह है कि परिवारों के द्वारा कोई बचत नहीं की जाती है – वे अपनी संपूर्ण आय को खर्च कर देते हैं)। इस प्रकार अर्थव्यवस्था की संपूर्ण आय "बिक्री आगम" के रूप में फमों को वापस आती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि "एक क्षेत्र का खर्च दूसरे क्षेत्र की आय होती है।"

2.2.3 वित्तीय बाजार सहित आय का चक्रीय प्रवाह

द्वि–क्षेत्रीय प्रतिरूप में, हम जानते हैं कि घरेलू क्षेत्र (परिवारों) के द्वारा प्राप्त कुल आय को वस्तुओं एवं सेवाओं पर खर्च कर दिया जाता है। लेकिन वास्तविक जीवन में, परिवार अपनी आय का एक भाग बचत करते हैं तथा उस पर ब्याज प्राप्त करते हैं। फर्में निवेश के उद्देश्य के लिए परिवारों से ऋण लेती हैं। वित्तीय संस्थान बचतकर्त्ता तथा निवेशकर्त्ता के मध्य (यहाँ परिवार तथा फर्में) मध्यस्थता करते हैं। वित्तीय बाजार परिवारों की बचत को एकत्रित करते हैं तथा इसे व्यावसायिक क्षेत्र के निवेश के रूप में आगे दे देते हैं (चित्र 2.2 देखिए)। बचतें मुद्रा के प्रवाह से रिसावों (leakages) का निर्माण करती हैं तथा निवेश प्रवाह में भराव (injection) बन जाता है।

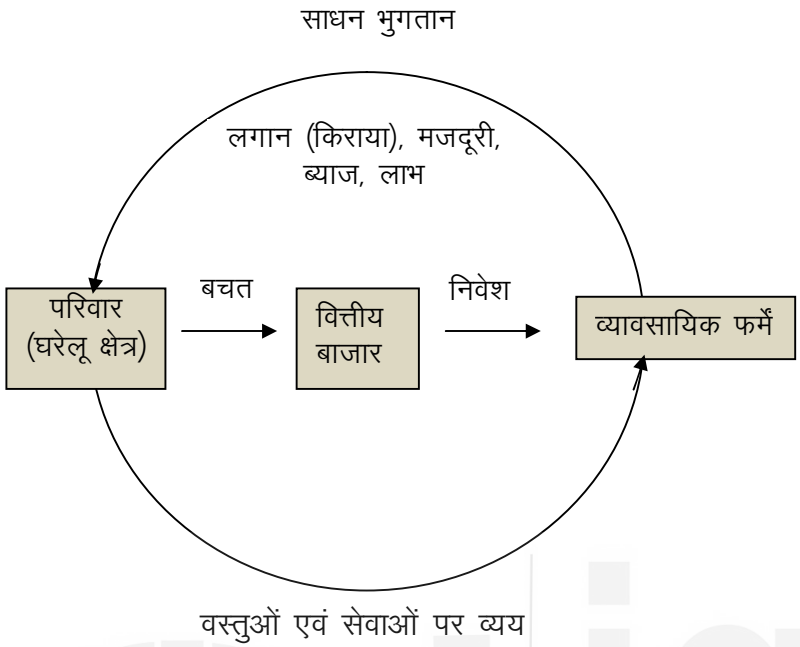

चित्र 2.2: पूँजी बाजार सहित द्वि–क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह

2.2.4 भराव और रिसाव

रिसाव, आय के प्रवाह से निकासी (आहरण) मात्रा होती है। यह परिवारों, कर भुगतानों, अथवा आयातों पर व्यय के द्वारा बचत के रूप में हो सकती है। दूसरी तरफ, भराव आय के चक्रीय प्रवाह में जोड़ी गई मात्रा (निवेश रूप में डाली गई मात्रा) है। चक्रीय प्रवाह हेतु भराव निवेश, सरकारी व्यय, आर्थिक सहायता (प्रतिदान), अथवा निर्यात के रूप में हो सकते हैं। रिसावों को निकासी कहा जाता है जबकि भरावों को "वृद्धि" कहा जाता है।

2.2.5 त्रि–क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय का प्रवाह

जब सरकारी क्षेत्र (अर्थात्, अर्थव्यवस्था का तीसरा क्षेत्र) को द्वि–क्षेत्रीय प्रतिरूप में जोड़ा जाता है, तो हम त्रि–क्षेत्रीय प्रतिरूप प्राप्त करते हैं। इस प्रतिरूप में, राजकोषीय संचालन (कर, सरकारी व्यय तथा हस्तांतरण भुगतानों) को जोड़ा जाता है। इन चरों का आय तथा व्यय प्रवाहों पर अलग–अलग प्रभाव होता है। कर, चक्रीय प्रवाह से रिसाव होते हैं क्योंकि ये "व्यक्तिगत प्रयोज्य आय" को कम करते हैं तथा इसलिए उपभोग तथा बचतों को भी। सरकार आर्थिक विकास के लिए पूँजी वस्तुओं, आधारभूत संरचना (उदाहरण के लिए, राजमार्गों, विद्युत, इत्यादि) रेलमार्गों, सुरक्षा, शिक्षा, लोक स्वास्थ्य, इत्यादि पर खर्च करती है। इसलिए सरकारी खर्च प्रवाह में भराव होते हैं क्योंकि यह घरेलू क्षेत्र से साधन सेवाओं को तथा व्यावसायिक क्षेत्र से वस्तुओं की खरीद से माँग सृजित करता है। और भी, हस्तांतरण भुगतान (उदाहरणार्थ, पेंशन, बेरोजगारी भत्ता, अनुदान, इत्यादि) प्रवाह में भराव होते हैं (क्योंकि यह घरेलू क्षेत्र में माँग सृजित करते हैं) आय तथा व्यय के प्रवाह को नीचे चित्र 2.3 में दिखाया गया है:

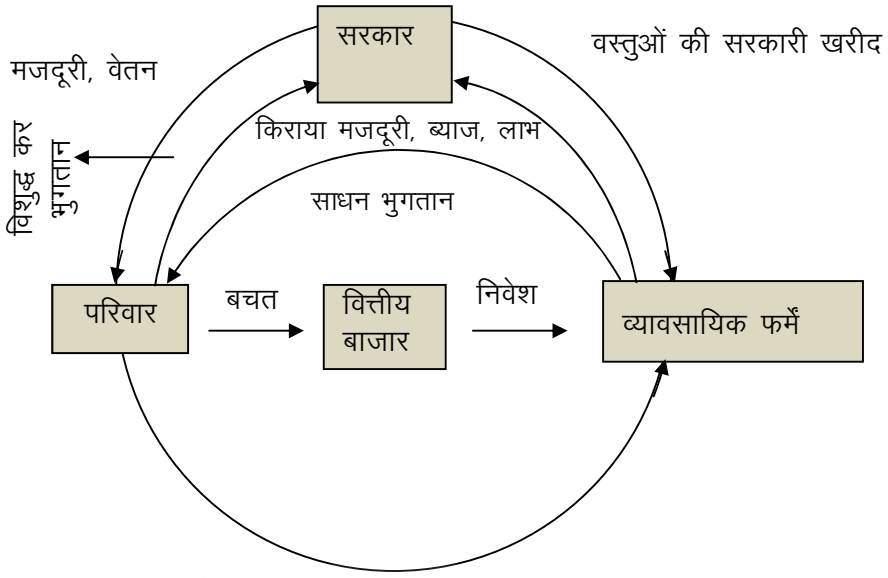

चित्र 2.3: त्रि–क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय तथा व्यय का चक्रीय प्रवाह

चित्र 2.3 में हम केवल परिवारों, फर्मों तथा सरकार के बीच मुद्रा प्रवाहों को ज्ञात करते हैं। सरकार फर्मों तथा परिवारों से वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदती है, जिसे चित्र 2.3 के ऊपरी हिस्से में प्रदर्शित किया गया है। सरकारी व्यय को मुख्य रूप से करों तथा ऋणों से वित्त पोषित किया जात है। द्वितीय मुद्रा प्रवाह परिवारों तथा व्यावसायिक फर्मों के द्वारा किए गए सभी भुगतानों को दिखाता है। परिवार सरकार को प्रत्यक्ष कर का भुगतान करता है, जबकि फर्मों की आय पर निगम कर के रूप में कर लगाया जाता है, लेकिन अंततः परिवारों द्वारा वहन किया जाता है। ये मुद्रा प्रवाह परिवारों तथा फर्मों के हस्तांतरण भुगतानों को कम करके इनके द्वारा किए गए कर भुगतानों को शामिल करता है। परिवारों तथा फर्मों की भाँति सरकार भी बचत करती है तथा वित्तीय बाजार से ऋण लेती है (भ्रम को दूर करने हेतु, वित्तीय बाजार से सरकार की ओर मुद्रा प्रवाह को हमने चित्र 2.3 में नहीं दिखाया है)। यदि बजट में अतिरेक है जो एक दुर्लभ घटना है तब अतिरेक के विस्तार के लिए आय के प्रवाह से विशुद्ध रिसाव होंगे तथा मुद्रा सरकार से पूँजी बाजार की ओर प्रवाहित होगी। यदि अतिरेक को सरकार द्वारा खर्च नहीं किया जा रहा है तो प्रवाह संकुचित (कम) होगा। बजट में घाटा एक सामान्य घटना है, जो सामान्यतः ऋणों के द्वारा पूरा किया जाता है तथा इसलिए, मुद्रा का प्रवाह पूँजी बाजार से सरकार की ओर होगा। इस प्रकार, बजट घाटे का तात्पर्य अर्थव्यवस्था में भरावों से होता है। यदि सरकार संतुलित बजट को बनाए रखती है, अर्थात् प्रवाह से कर के रूप में निकाली गई मुद्रा की मात्रा को सरकारी व्यय के माध्यम से बिल्कुल (एकदम) प्रतिस्थपित किया जाएगा।

2.2.6 चार–क्षेत्रीय प्रतिरूप में आय का प्रवाह

यदि, हम बाह्य क्षेत्र को शेष विश्व के साथ आय के प्रवाह में शामिल नहीं करते हैं, तो प्रतिरूप (मॉडल) अपूर्ण बना रहेगा। घरेलू अर्थव्यवस्था शेष विश्व से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार (आयातों तथा निर्यातों) तथा वित्तीय प्रवाहों के माध्यम से जुड़ी होती है। चित्र 2.4 में, हम जब विदेशी व्यापार विद्यमान होता है तो एक खुली अर्थव्यवस्था में मुद्रा प्रवाह कैसे होता है, को दिखाते हैं।

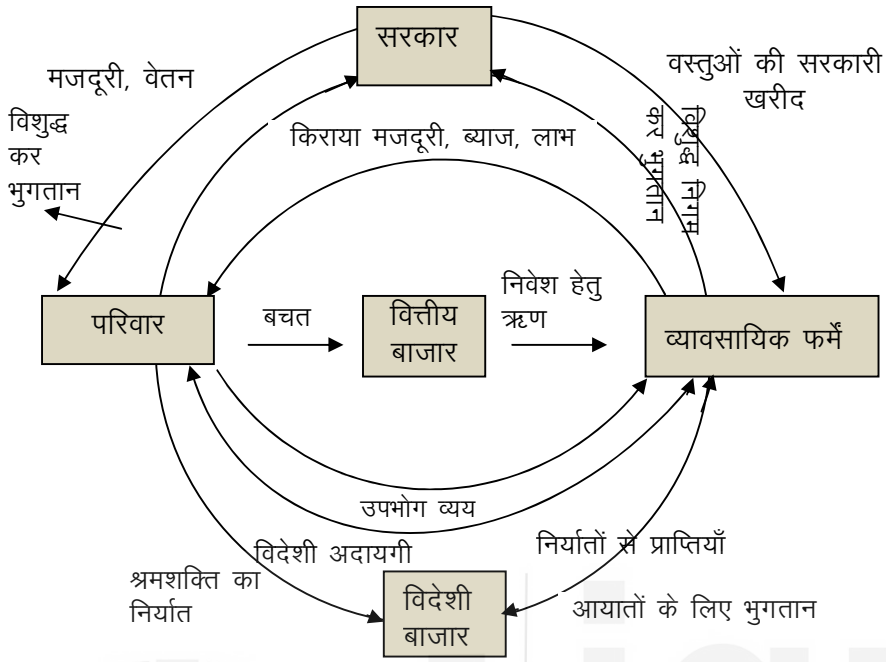

चित्र 2.4: एक खुली अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह

चित्र का निचला भाग विदेशी व्यापार के सम्बन्ध में मुद्रा के प्रवाह को दिखाता है। वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्यात, भरावों (निर्यात) से प्राप्तियों के रूप में राष्ट्र के अन्दर मुद्रा लाते हैं। दूसरी तरफ, आयात प्रवाह से मुद्रा के उत्प्रवाह (रिसावों) का कारण होता है। यदि निर्यात तथा आयात समान हैं तो व्यापार शेष विद्यमान होता है। सामान्यतः, निर्यात आयात के समान नहीं होते हैं। यदि निर्यात के मूल्य आयात के मूल्य से अधिक होते हैं तो व्यापार अतिरेक घटित होते हैं। इसके विपरीत, यदि निर्यात के मूल्य आयात के मूल्य से कम है। तो व्यापार घाटा उत्पन्न होता है। एक खुली अर्थव्यवस्था में, राष्ट्र आपस में कोषों को उधार लेकर तथा देकर (वित्तीय बाजार) सम्पर्क करते हैं। विश्व के वित्तीय बाजार इन दिनों अच्छी तरह से एकीकृत हो गए हैं।

जब निर्यात (X) आयात (M) से अधिक होते हैं तो अर्थव्यवस्था में व्यापार अतिरेक होता है तथा इसलिए निवल अथवा विशुद्ध पूँजी चक्रीय प्रवाह होगा। विशुद्ध पूँजी चक्रीय प्रवाह का तात्पर्य है कि विदेशी नागरिक अपने घरेलू निर्यात की खरीद को वित्त करने के लिए घरेलू बचतकर्त्ताओं से ऋण लेंगे। इसलिए, घरेलू बचतकर्त्ता विदेशी नागरिकों को उधार देते हैं और बाह्य वित्तीय सम्पत्ति अर्जित करते हैं। अतः, आय का प्रवाह अतिरेक की मात्रा से बढ़ (भराव) जाता है। दूसरी ओर, यदि निर्यात घाटा अथवा आयात अतिरेक है (अर्थात जब आयात निर्यात से अधिक है), तो राष्ट्र का "व्यापार शेष" प्रतिकूल व्यापार घाटा होता है। अतः परिवार एवं व्यावसायिक फर्में शेष विश्व से ऋण (उधार) लेते हैं। इसलिए, विदेशी नागरिक घरेलू वित्तीय परिसम्पत्तियों को प्राप्त करेंगे। इस तरह की स्थितियों में आय का प्रवाह घाटे की मात्रा से कम (रिसाव) हो जाता है।

बोध प्रश्न 1

1) आय के प्रवाह से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

.....

2) मुद्रा प्रवाह तथा वास्तविक चक्रीय प्रवाह में विभेद कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) द्वि–क्षेत्रीय प्रतिरूप में आय का प्रवाह कैसे होता है? वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4) भरावों और रिसावों क मध्य अन्तर का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

5) आय के प्रवाह में सरकारी क्षेत्र के समावेशन के विभिन्न प्रभाव क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

6) प्रवाह पर अनुकूल और प्रतिकूल व्यापार शेषों के प्रभाव की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.3 राष्ट्रीय आय तथा सम्बन्धित समुच्चय

जैसा कि नाम से पता चलता है कि राष्ट्रीय आय को समय की एक अवधि के दौरान राष्ट्र की आय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह राष्ट्र की क्रयशक्ति को इंगित करती है। इसे एक वर्ष में अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल मौद्रिक्र मूल्य के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह उत्पादक तथा उपभोक्ता वस्तुओं चाहे वे स्वःउपभोग अथवा लेनदेन के लिए ही शामिल करता है। यह अर्धनिर्मित तथा ग़ैर–आर्थिक वस्तुओं को शामिल नहीं करता है। समष्टिगत समुच्चयों (समग्रों) की अनेक अवधारणाएँ हैं। प्रत्येक अवधारणा का विशिष्ट अर्थ मापने की विधि तथा प्रयोग हैं। ये हैं:

1. बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Market Price - GDP_{MP})
2. बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product at Market Price - GNP_{MP})
3. बाजार कीमत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product at Market Price - NNP_{MP})
4. बाजार कीमत पर विशुद्ध घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product at Market Price - NDP_{MP})
5. साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Factor Cost - GDP_{FC})
6. साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product at Factor Cost - GNP_{FC})
7. साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product at Factor Cost - NNP_{FC})
8. आधार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Basic Price)

सकल घरेलू उत्पाद पर देश की सीमाओं के अंतर्गत उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य का योग है। उदाहरण के लिए, भारत की सकल घरेलू उत्पाद भारत के अन्दर विदेशी नागरिकों तथा भारत के निवासियों के द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को शामिल करता है, लेकिन यह विदेश में निवास कर रहे भारतीयों के द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को शामिल नहीं करता है। हम ऊपर वर्णित अवधारणाओं पर आगे विस्तृत वर्णन करते हैं।

1. बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP})

सकल घरेलू उत्पाद (GDP) एक देश की सीमाओं के अंतर्गत उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य, करों का घटाव एवं आयातों पर अनुदान का योग है। सकल घरेलू उत्पाद एक चक्रीय प्रवाह अवधारणा है, अर्थात्, एक वर्ष के दौरान उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का प्रकार है। यह पूर्व वर्ष के उत्पादन को शामिल नहीं करता है। सकल घरेलू उत्पाद की गणना करते समय, ग़ैर–कानूनी क्रियाओं के माध्यम से अर्जित आय को हटा दिया जाता है। इसके आगे, सकल घरेलू उत्पाद से हस्तांतरण भुगतान, पूँजीगत लाभों तथा वित्तीय लेन–देनों को भी हटा दिया जाता है।

बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}) को निम्न प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता है:

GDP_{MP} = राष्ट्र के निवासियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का मौद्रिक मूल्य + विदेशी नागरिकों के द्वारा स्थानीय स्तर पर अर्जित आय – विदेशों में रह रहे राष्ट्र के नागरिकों की प्राप्त आय

2. बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP_{MP})

GNP_{MP} को निजी घरेलू उत्पादन के साधनों, जो एक वित्तीय वर्ष में अर्थव्यवस्था तथा विदेशों में रोजगारित हो सकते हैं, के द्वारा एक अर्थव्यवस्था में उत्पादित सभी अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य के रूप में परिभाषित किया गया है। GNP_{MP} तथा GDP_{MP} के मध्य अन्तर "विदेशों से शुद्ध साधन आय" (Net Factor Income from abroad - NFIA) है। विदेशों से शुद्ध साधन आय कुल मात्रा जिसे एक देश के नागरिक विदेशों से अर्जित करते हैं तथा कुल मात्रा जिसे विदेशी नागरिक घरेलू अर्थव्यवस्था में अर्जित करते हैं का अन्तर है। इस प्रकार,

GNP_{MP} = अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं का मौद्रिक मूल्य + विदेशों में राष्ट्रीय निवासियों द्वारा अर्जित आय – विदेशी नागरिकों के द्वारा स्थानीय स्तर पर अर्जित आय

अथवा

$GNP_{MP} = GDP_{MP}$ + विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA)

यदि विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA) धनात्मक है, अर्थात् देश के निवासियों के द्वारा अर्जित आय उस देश में विदेशी नागरिकों की आय से अधिक है, तब GNP > GDP है। दूसरी तरफ, यदि विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA) ऋणात्मक है, अर्थात् देश के निवासियों के द्वारा अर्जित आय उस देश में विदेशी नागरिकों की आय से कम है, तब GNP < GDP है।

3. बाजार कीमत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{MP})

NNP_{MP} मूल्यह्रास को घटाते हुए, जो कि स्थिर पूँजी का उपभोग है सभी अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं का कुल मौद्रिक मूल्य है। इस प्रकार,

$NNP_{MP} = GNP_{MP}$ – मूल्यह्रास

अथवा,

$NNP_{MP} = GDP_{MP}$ – मूल्यह्रास + विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA)

NNP तथा GNP के मध्य अन्तर मूल्यह्रास है।

मूल्यह्रास = NNP_{MP}- GNP_{MP}

4. बाजार कीमत पर विशुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP_{MP})

NDP_{MP} को एक वित्तीय वर्ष के दौरान सामान्य निवासियों (Normal Residents) तथा ग़ैर–निवासियों (non-residents) के द्वारा एक देश की घरेलू सीमाओं में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के बाजार मूल्य में से मूल्यह्रास को घटाकर के परिभाषित किया जाता है। इस प्रकार,

$NDP_{MP} = GDP_{MP}$ – मूल्यह्रास (Depreciation)

$NDP_{MP} = NNP_{MP}$ – NFIA

5. साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (NDP_{FC})

NDP_{FC} को अर्जित की गई सभी घरेलू आय के योग के रूप में परिभाषित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह उत्पादन के सभी साधनों के द्वारा अर्जित की गई कुल साधन आय है। इसकी NDP_{MP} में से विशुद्ध अप्रत्यक्ष करों (Net Indirect Taxes, NIT) को घटाते हुए गणना की जा सकती है। विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर अप्रत्यक्ष करों तथा अनुदान के अंतर के बराबर है। NDP_{FC} की निम्न रूप में गणना की जा सकती है:

NDP_{FC} = कर्मचारियों का पारिश्रमिक + प्रचालन अधिशेष + मिश्रित आय

अथवा,

$NDP_{FC} = NDP_{MP}$ – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर (NIT)

अथवा,

$NDP_{FC} = NDP_{MP}$ – अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता

6. साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GDP_{FC})

यह एक वित्तीय वर्ष के दौरान एक देश की घरेलू सीमाओं में सभी उत्पादकों के द्वारा विशुद्ध मूल्य वृद्धि का योग है। इसकी GDP_{MP} में से विशुद्ध अप्रत्यक्ष करों (Net Indirect Taxes, NIT) को घटाते हुए गणना की जा सकती है। प्रतीकात्मक रूप से,

$GDP_{FC} = GDP_{MP}$ – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर (NIT)

अथवा

$GDP_{FC} = GDP_{MP}$ – अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता

अथवा

$GDP_{FC} = NDP_{FC}$ + मूल्य ह्रास

= कर्मचारियों का पारिश्रमिक + प्रचालन अधिशेष + मिश्रित आय

7. साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (GNP_{FC})

यह एक वित्तीय वर्ष में एक देश के सामान्य निवासियों के द्वारा एक अर्थव्यवस्था में उत्पादित साधन लागत पर मापी गई सभी वस्तुओं एवं सेवाओं का योग है।

$GNP_{FC} = GDP_{FC}$ + विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA)

$GNP_{FC} = GDP_{MP}$ – अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता

8. आधार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद

सकल घरेलू उत्पाद किसी देश की सीमाओं के अन्दर उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य, करों के घटाव एवं आयात पर आर्थिक सहायता का योग है।

टिप्पणी:

I) सकल तथा विशुद्ध के मध्य अन्तर मूल्यह्रास है।

विशुद्ध = सकल – मूल्यह्रास

सकल = विशुद्ध + मूल्यह्रास

II) राष्ट्रीय तथा घरेलू के मध्य अन्तर विदेशों से शुद्ध साधन भुगतान (Net Factor Payment - NFP) है:

शुद्ध साधन भुगतान (NFP) = सामान्य निवासियों के द्वारा विदेशों से साधन भुगतान – एक देश के घरेलू सीमाओं के अंतर्गत ग़ैर–निवासियों का साधन भुगतान

राष्ट्रीय = घरेलू + शुद्ध साधन भुगतान (NFP)

III) बाजार कीमत तथा साधन लागत के मध्य अन्तर विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर (Net Indirect Taxes, NIT) है।

विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर = अप्रत्यक्ष कर – आर्थिक सहायता

बाजार कीमत = साधन लागत + विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

साधन लागत = बाजार कीमत – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

IV) राष्ट्रीय आय = $\mathbf{NNP_{FC}}$

V) विशुद्ध घरेलू आय = $\mathbf{NDP_{FC}}$

उदाहरण 2.1: निम्नांकित समंकों की सहायता से साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद तथा बाजार कीमत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद की गणना कीजिए।

		(करोड़ रुपए में)
1)	कर्मचारियों का पारिश्रमिक	26,142
2)	प्रचालन अधिशेष	12,031
3)	स्वःनियोक्ता की मिश्रित आय	28,620
4)	स्थिर पूँजी का उपभोग	4,486
5)	अप्रत्यक्ष कर	9,703
6)	अनुदान	1,350

हल:

GNP_{FC} = कर्मचारियों का पारिश्रमिक + प्रचालन अधिशेष + मिश्रित आय + स्थिर पूँजी का उपभोग

= 26142 करोड़ रुपए + 12031 करोड़ रुपए + 28620 करोड़ रुपए + 4486 करोड़ रुपए

= 71,279 करोड़ रुपए

GNP_{MP} = GNP_{FC} + अप्रत्यक्ष कर – अनुदान

= 71279 + 9703 – 1350

= 79632 करोड़ रुपए

उदाहरण 2.2: निम्नांकित समंकों की सहायता से साधन लागत पर (क) विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर, तथा (ख) विशुद्ध घरेलू उत्पाद की गणना कीजिए।

मद	(करोड़ रुपए में)
(i) बाजार कीमत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद	1,400
(ii) विदेशों से शुद्ध साधन आय	(–) 20
(iii) साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद	1,300
(iv) स्थिर पूँजी उपभोग	100
(v) राष्ट्रीय ऋण ब्याज	18

हल:

(a) विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर = बाजार कीमत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद – साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद – स्थिर पूँजी का उपभोग)

NIT = 1,400 – (1,300 – 100)

= 1,400 –1,300 +100

= 200 करोड़ रुपए

(b) साधन लागत पर विशुद्ध घरेलू उत्पाद = साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद – स्थिर पूँजी का उपभोग – विदेशों से शुद्ध साधन आय

NDP_{FC} =1,300 – 100 – (–) 20

=1,300 – 100 + 20 = 1,220 करोड़ रुपए

उदाहरण 2.3: निम्नांकित समंकों की सहायता से NNP_{FC}, GNP_{MP}, GNP_{FC}, और NDP_{MP} की गणना कीजिए ।

	मूल्य (करोड़ रुपए में)
NDP_{FC}	1,33,151
मूल्य ह्रास	11,242
विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर	19,183
विदेशों से शुद्ध आय	(–) 681

हल:

NNP_{FC} = NDP_{FC} + विदेशों से शुद्ध आय

= 1,33,151 + (–) 681 = 1,32,470 करोड़ रुपए

NNP_{MP} = NNP_{FC} + विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

= 1,32,470 + 19,183 = 1,51,653 करोड़ रुपए

GNP_{MP} = NNP_{MP} + मूल्य ह्रास

= 1,51,653 + 11,242 = 1,62,895 करोड़ रुपए

GDP_{MP} = GNP_{MP} – विदेशों से शुद्ध आय
=1,62,895 – (–681) = 1,63,576 करोड़ रुपए

GDP_{FC} = GDP_{MP} – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर
= 1,63,576 – 19,183 = 1,44,393 करोड़ रुपए

GNP_{FC} = GDP_{FC} + विदेशों से शुद्ध आय
= 1,44,393 + (–681) = 1,43,712 करोड़ रुपए

NDP_{MP} = GDP_{MP} – मूल्य ह्रास
= 1,63,576 – 11,242 = 1,52,334 करोड़ रुपए

2.4 सम्बन्धित समुच्चयों का माप

NDP_{FC} अथवा घरेलू साधन आय दो क्षेत्रों में उत्पन्न हो सकती है: i) निजी क्षेत्र, तथा ii) सार्वजनिक अथवा सरकारी क्षेत्र। निजी क्षेत्र से प्राप्त NDP_{FC} उस NDP_{FC} का भाग है जो कर्मचारियों के पारिश्रमिक, प्रचालन, अधिशेष तथा स्वःनियोक्ता की मिश्रित आय के रूप में है। निजी क्षेत्र से प्राप्त NDP_{FC} को निम्न प्रकार से दिया गया है:

निजी क्षेत्र से प्राप्त NDP_{FC} = NDP_{FC} – सरकारी विभागीय उद्यमवृत्तियों से प्राप्त आय – ग़ैर–विभागीय उद्यमों की बचतें

सरकारी क्षेत्र को घरेलू उत्पाद से प्राप्त आय के निम्नलिखित दो घटक हैं:

i) सरकार की सम्पत्ति तथा उद्यमवृत्ति से प्राप्त आय; और

ii) ग़ैर–विभागीय उद्यमों की बचतें।

2.4.1 निजी आय

निजी आय में सभी स्रोतों से आय तथा सरकार एवं शेष विष्व (विदेशों) से वर्तमान हस्तांतरण से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय को शामिल किया जाता है। यह सभी स्रोतों से प्राप्त आय हो सकती है, अर्थात्, साधन आयों एवं हस्तांतरण आय को निजी क्षेत्र के द्वारा प्राप्त किया है। यह "विदेशों से शुद्ध साधन आय" (Net Factor Income from Abroad - NFIA) तथा राष्ट्रीय ऋणों पर ब्याज (सरकार द्वारा ऋणों पर दिया गया ब्याज) को भी शामिल करता है। अतः निजी आय सभी प्रकार की आयों (अर्जित एवं अनार्जित) को शामिल करती है।

निजी आय = निजी क्षेत्र को प्राप्त NDP_{FC} + विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA) + सरकार से विशुद्ध हस्तांतरण + शेष विश्व से विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण भुगतान + राष्ट्रीय ऋणों पर ब्याज

2.4.2 व्यक्तिक (व्यक्तिगत) आय

व्यक्तिगत आय एक वर्ष में वर्तमान हस्तांतरण भुगतानों एवं साधन आयों के रूप में सभी स्रोतों से व्यक्तियों के द्वारा प्राप्त सभी प्रकार की आयों का योग है। यह साधन आय तथा हस्तांतरण आय को शामिल करता है। यह उद्यमों के लाभ कर तथा प्रतिधारित आय को शामिल नहीं करता है।

व्यक्तिगत आय = निजी आय – निगम कर – अवितरित लाभ + हस्तांतरण भुगतान

2.4.3 प्रयोज्य आय

प्रयोज्य आय को करों के बाद आय के रूप में परिभाषित किया जाता है, अर्थात्, अपनी आय तथा सम्पत्ति पर सभी प्रकार के लगाए गए करों की कटौती के बाद व्यक्तियों की शेष आय।

प्रयोज्य आय = व्यक्तिगत आय – अप्रत्यक्ष कर – सरकारी प्रशासनिक विभागों की विविध प्राप्तियाँ (शुल्क, जुर्माने, इत्यादि)

उदाहरण 2.4: निम्नांकित समंकों से व्यक्तिगत आय तथा निजी आय की गणना कीजिए।

मद	करोड़ रुपए में
निजी उद्यम की प्रतिधारित आय	10
सरकारी प्रशासनिक विभागों की विविध प्राप्तियाँ	50
व्यक्तिगत प्रयोज्य आय	180
व्यक्तिगत कर	30
निगम लाभ कर	10

हलः

व्यक्तिगत आय = व्यक्तिगत प्रयोज्य आय + व्यक्तिगत कर + सरकारी विभागों की विविध प्राप्तियाँ

= 180 + 30 + 50 = 260 करोड़ रुपए

निजी आय = व्यक्तिगत आय + निजी उद्यमों की प्रतिधारित आय + निगम लाभ कर

= 260 + 10 + 10 = 280 करोड़ रुपए

उदाहरण 2.5: निम्नांकित समंकों से (क) व्यक्तिगत आय तथा (ख) व्यक्तिगत प्रयोज्य आय की गणना कीजिए।

मद	करोड़ रुपए में
1. निजी आय	2000
2. निजी हित के उद्यमों की विशुद्ध प्रतिधारित आय	600
3. परिवारों के द्वारा भुगतान किया गया प्रत्यक्ष कर	200
4. निगम कर	350
5. राष्ट्रीय ऋण ब्याज	250

हलः

a) व्यक्तिगत आय = निजी आय – निजी हित के उद्यमों की विशुद्ध प्रतिधारित आय – निगम कर

= 2000 – 600 – 350 = 1050 करोड़ रुपए

b) निजी प्रयोज्य आय = व्यक्तिगत आय + निजी निगमों की प्रतिधारित आय + निगम लाभ कर

= 1050 – 200 = 850 करोड़ रुपए

उदाहरण 2.6: निम्नांकित समंकों से विशुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय की गणना कीजिए।

मद	(करोड़ रुपए में)
i) बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद	2000
ii) शेष विश्व के लिए विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण	(–)200
iii) विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर	150
iv) विदेशों से शुद्ध साधन आय	60
v) राष्ट्रीय ऋण ब्याज	70
vi) स्थिर पूँजी का उपभोग	200
vii) सरकार के वर्तमान स्तांतरण	150

हलः

विशुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय (Net National Disposable Income, NNDI) = GDP_{MP} – विदेशों से शुद्ध साधन आय – स्थिर पूँजी का उपभोग – शेष विश्व के लिए विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण

NNDI = 2000 – 60 – 200 – (–200)

= 1940 करोड़ रुपए

उदाहरण 2.7: निम्नांकित समंकों से सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय की गणना कीजिए।

मद	(करोड़ रुपए में)
i) राष्ट्रीय आय	2,000
ii) विदेशों से शुद्ध साधन आय	(–)50
iii) स्थिर पूँजी का उपभोग	200
iv) शेष विश्व के लिए विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण	150
v) विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर	250

हलः

सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय (Gross National Disposable Income , GNDI) = राष्ट्रीय आय + स्थिर पूँजी का उपभोग + शेष विश्व के लिए विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण + विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

GNDI = 2000 करोड़ रुपए + 200 करोड़ रुपए + 150 करोड़ रुपए + 250 करोड़ रुपए

GNDI = 2600 करोड़ रुपए

सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय = 2600 करोड़ रुपए

उदाहरण 2.8: निम्नांकित समंकों से राष्ट्रीय प्रयोज्य आय को ज्ञात कीजिए।

मदें	(करोड़ रुपए में)
(i) सरकारी प्रशासनिक विभागों से वर्तमान हस्तांतरण	215
(ii) ग़ैर–विभागीय उद्यमों की बचतें	7
(iii) साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद	325
(iv) विदेशों से शुद्ध साधन आय	12
(v) शेष विश्व से विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण	12
(vi) अप्रत्यक्ष कर	35
(vii) आर्थिक सहायता	10

हल:

राष्ट्रीय प्रयोज्य आय = साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद + शेष विश्व से विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण + विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर (अप्रत्यक्ष कर – आर्थिक सहायता)

NDI = 325 करोड़ रुपए +12 करोड़ रुपए + (35 करोड़ रुपए –10 करोड़ रुपए)

=325 करोड़ रुपए +12 करोड़ रुपए + 25 करोड़ रुपए

=362 करोड़ रुपए

बोध प्रश्न 2

1) "राष्ट्रीय आय" का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्या सकल घरेलू उत्पाद, सकल राष्ट्रीय उत्पाद से अधिक हो सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) व्यक्तिगत आय तथा निजी आय के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4) व्यक्तिगत आय और प्रयोज्य आय के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 सार संक्षेप

इस इकाई में हमने एक अर्थव्यवस्था के लिए राष्ट्रीय आय लेखांकन (लेखा पद्धति) की संरचना उपलब्ध कराई है। अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से घरेलू क्षेत्र, फर्म क्षेत्र, सरकारी क्षेत्र तथा शेष विश्व के माध्यम से कार्य करती है। राष्ट्रीय अय लेखांकन लेनदेनों अथवा इन क्षेत्रों के बीच आय तथा व्ययों के प्रवाहों को अंकित करता है। इन अंकित आँकड़ों (समंकों) का प्रयोग करके किसी अर्थव्यवस्था के कार्य को समझा जा सकता है, जिनका विभिन्न समग्रों जैसे सकल घरेलू उत्पाद (GDP), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) तथा सकल राष्ट्रीय आय (GNI) को मापने में भी प्रयोग किया जाता है।

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) यह एक अर्थव्यवस्था के सभी विभिन्न क्षेत्रों के मुद्रा आय के चक्रीय प्रवाह अथवा वस्तुओं एवं सेवाओं के चक्रीय प्रवाह को दर्शाते हैं।

2) उपभाग 2.2.1 का संदर्भ देखिए।

3) उपभाग 2.2.2 का संदर्भ देखिए।

4) उपभाग 2.2.4 का संदर्भ देखिए।

5) धनात्मक प्रभावः व्यय तथा हस्तांतरण भुगतानों के साथ चक्रीय प्रवाह को बढ़ाता है। ऋणात्मक प्रभावः करों के लगाने से प्रवाह घटता है।

6) प्रतिकूल व्यापार : रिसाव; तथा अनुकूल व्यापारः भराव।

बोध प्रश्न 2

1) अर्थव्यवस्था में उत्पादित उत्पादन का योग।

2) हाँ; यदि विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA) ऋणात्मक है।

3) चित्र 2.1 का प्रयोग कीजिए तथा उपभाग 2.4.1 तथा 2.4.2 का संदर्भ देखिए।

4) चित्र 2.1 का प्रयोग कीजिए तथा उपभाग 2.4.2 तथा 2.4.3 का संदर्भ देखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY